Written by दिनेश जुआल
Tuesday, 03 July 2018 19:54

: □□□□□□□□ □□□ □□□□, □□ □□□ □□□□, □□□□□□□ □□□ □□ □□□□ : □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ : □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ :

□□□□□ □□□□

□□□□□□□□□ **:**उत्तरा प्रकरण पर अपनी टिप्पणी के साथ मैंने अखबारों की भूमिका पर भी छोटी सी टिप्पणी कर दी थी□ लानत तो खुद को भेजी थी□ कुछ पुराने साथी नाराज है और होना ही चाहि□ , नहीं तो मेरी वो टिप्पणी व्यर्थ जाती□ उत्तराखंड में सोशल मीडिया पर शुक्रवार को जितनी पोस्ट उत्तरा जी के मामले पर दिखी उतनी अब तक शायद ही किसी और मामले पर हुई हों□ Ndtv, ajtak, avpnew से लेकर रीजनल, लोकल चैनल्स तक ने चिंता के साथ इस घटना को रखा□ उत्तराखंडी ही नहीं राष्ट्रीय स्तर के पत्रकारों, विचारवान लोगों ने सोशल मीडिया पर सरकार के मुगलिया बादशाही अंदाज की निंदा की□ ऐसे में देहरादून के अखबारों में सरकार की छवि की गंभीर चिंता के साथ खबर को सही ढंग से ना देने पर यहां के पत्रकारों को भी खूब गालियां पड़ी□ ये गालियां मैंने नहीं दी□ कुछ न्यूज पोर्टल देखे उनमें भी मीडिया की भूमिका पर सवाल उठा□ ग□ हैं□ यहां के पत्रकारों की प्रतिक्रिया भी है□

मीडिया प्रभारी, मीडिया सलाहकार, मीडिया समन्वयक सब अपनी ड्यूटी कर रहे थे, नमक का फर्ज अदा कर रहे थे□ लेकिन जब लगा कि संपादक पर मीडिया समन्वयक भारी पड़ ग□ तो लोगों ने जो महसूस किया, लिख दिया□ इनका काम सरकार की अच्छी छवि पेश करना और जनता के मतलब की सूचना□ं मीडिया के माध्यम से पहुंचाना है□ जब ये खुद संपादक की हैसियत में आ जाते हैं□ खबर का □ंगल बताते हैं या गलत जानकारी फीड करने लगते हैं तो मीडिया की हत्या करने लगते हैं□ ऐसे ही मीडिया को लुभाने भरमाने वाले लोगों की वजह से हमारे देश का मीडिया प्रेस की आजादी के मामले में १३८वें स्थान पर आ गया है□

अगर मीडिया की समालोचना का अपराध हुआ तो इसमें मेरे साथ सैकड़ों और लोग शामिल हैं□ हम सबने ये बहुत अच्छा गुनाह कर डाला□ चलो हिंदुस्तान में इस प्रकरण का फॉलोअप तो दूसरे दिन पहले पेज पर आया□ सवाल तो अब भी है कि जब असल घटना हुई तो धोकर अन्दर क्यों खदेडी गई □ आज अन्दर □क पैकेज भी है□ कल वाकई निराशा हुई थी, जबकि इस अखबार में पूरन बिष्ट जैसे पहाड़ के प्रति बेहद संवेदनशील समाचार संपादक, और □क □क बीट पर □क्सपर्ट जानकारी रखने वाले वरिष्ठ रिपोर्टर हैं□ तो क्या जिस तरह खबर परोसी गई उसके पीछे इस अखबार के रिपोर्टर रह चुके सूचना समन्वयक दर्शन रावत की मेहनत थी□ या फिर बॉस की? अगर ऐसा होता रहता है तो उन पत्रकारों का क्या मनोबल रहेगा जो काबिल हैं और इस अखबार से बड़ी आस्था से जुड़े हैं□ जागरण में काफी हद तक जनभावनाओं की कद्र दिख रही है□ यहां के धीर गंभीर संपादक कुशल जी विवादों से दूर रहते हैं□ आज के उनके पैकेज में भी कुछ चिंता□ं दिख रही हैं□ अमर उजाला ने कल भले ही पूरा भाव न पकड़ा हो लेकिन प्लेसिंग सबसे अच्छी थी□ टॉप बॉक्स□ आज भी पहले पेज पर फ्लायर के अलावा अन्दर पूरा पेज, जिसमें उत्तराखंड की उत्तराओं की चिंता दिख रही है□ संपादक जी ने शहर से बाहर होते हु□ भी अपनी टीम को गाइड किया उसके लि□ सराहना□

मै आज सोशल मीडिया का प्रभाव भी देख रहा हूं□ यहां बात सिर्फ इस प्रकरण की हो रही है और मेरा मानना है कि ऐसे ही और मुद्दों पर भी ये दबाव बनना चाहि□□ वैसे सोशल मीडिया पर सब कुछ बहुत अच्छा नहीं हो रहा है□ वहां तो चुनाव लडा जा रहा है□ ये देखना भी सुखद रहा कि उत्तरा प्रकरण पर सरकार के समर्थन में उतरे कुछ भाड़े के जैसे लोगों को मुंह की खानी पड़ी और मैदान छोड़ना पड़ा□

Written by दनिश जुआल
Tuesday, 03 July 2018 19:54

□कबात साफ है कि इस प्रकरण में अगर बात कुछ न्याय की तरफ जाती है, मुख्यमंत्री परोक्ष रूप से ही सही अपनी गलती का अहसास करते हैं, ठस्की अफसरों और खुद को खुदा मान बैठे लोगों को थोड़ी सी भी अक्ल आत्ती है तो क्रेडटि उन सैकड़ों लोगों को जाता है जो कल से अपनी भावना□ं व्यक्त कर रहे थे□ सब इसलि□ दुखी थे कि □क शक्षिकि का भरे दरबार में अपमान हुआ□ सबको अपनी प्राइमरी शक्षिक की शक्ल याद आयी होगी □ जसिने हमें अक्षर ज्ञान ही नहीं जीवन के बुनयिादी पाठ पढ़ा□ थे□ मुख्यमत्री ने भी प्राइमरी जरूर पढ़ी होगी, लेकनि उनके लि□ सब नौकर है□ वो मालकि ठहरे सूबे के□ सस्पेंड करो इसको, ले जाओ इसको, कस्टडी में लो इसको...... उत्तरा जी के कानों ये इसको ... इसको.... इसको ... बार बार गूंज रहा था□ पत िकी मौत के बाद बखिरी गृहस्थी से दुखी शक्षिकि के लि□ न्याय नहीं है तो ऐसा अपमान तो ना करो□ ऐसी तो जेलर की भी भाषा नहीं होती □ बहरहाल शक्षिकि थी कुछ तो सबक सखिाया ही□ परोक्ष रूप से ही सही□ चोर उचक्के तो उन्होंने □क बरिादरी के लि□ कहा और यकीन मानि□ सामने चाटुकार कुछ भी कहें पीठ पीछे आम जनता इस बरिादरी को ऐसे और इससे मलिते जुलते संबोधनो से नवाजती है□ यहां मीडयिा से द्रवति होने की अपेक्षा थी□ रपिोर्ट कर रहे और खबर तय कर रहे लोगों में भी कुछ शक्षिकों की संतान होंगे और उन्हें पता होगा सम्मान और स्वाभमिान का महत्व शक्षिक क्या बताते हैं□

मीडयिा में अगर कुछ लोग ये गलतफहमी पाले बैठे हैं कि सच तो वहीं माना जा□गा जो हम लखिेंगे तो पोलैंड की तानाशाही का इतहिास पढ़ लें □ हम तो भारत जैसे लोकतंत्र में हैं□ उत्तराखंड के मुख्यमंत्री को नेक सलाह कि सरिफ मीडयिा मैनेजमेंट के भरोसे ना रहें□ यहां की राजनीत िमें टांग खींचने का खेल आप तो जानते ही हैं□

(अमर उजाला और हनि्□दुस्□तान समाचार पत्र में कई संस्□करणों में संपादक रह चुके हैं दनिश जुआल□ उनका यह आलेख उनकी वाल से साभार है)